तबला वाद्य के अनमोल रत्न– जीवनवृत एंव कृतित्व (पंजाब घराना के विशेष संदर्भ में)

प्रियंका अरोड़ा
शोध–छात्रा, संगीत विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर
प्रो. (डॉ.) गुरप्रीत कौर
अधिष्ठाता, संगीत एंव मंच कला संकाय, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

पांच नदियों का प्रदेश पंजाब भारत की ऐसी धरोहर है, जिसके प्रति अनायास ही स्नेह एंव श्रद्धा उमड़ती है। माँ सरस्वती ने 'पंजाब' प्रदेश की वसुन्धरा पर विशेष अनुकम्पा प्रदान की है। इस पावन भूमि पर विभिन्न उत्कृष्ट कलाकारों ने जन्म लिया एंव अपनी कला साधना के माध्यम से 'पंजाब' प्रदेश के वर्चस्व को न केवल भारत में अपितु विदेशों में भी स्थापित किया है। तबला वादन के संदर्भ में विशेषतः पंजाब घराना के परिपेक्ष्य में कुछ असाधारण, प्रतिभा सम्पन्न तबला नवाज़ हुए है, जिन्होने अपनी कला साधना, अथक परिश्रम लगन एंव समर्पण भावना, सृजनात्मकता के माध्यम से तबला वाद्य को विश्वभर में सर्वोत्कृष्ट स्थान दिलवाने में विलक्षण, अनुपम एंव अविस्मरणीय योगदान दिया है। पंजाब प्रदेश के इन सांगीतिक हस्ताक्षरों की वादन शैली का विशिष्टता एंव विलक्षणता के कारण ही तबला वाद्य विश्व विख्यात वाद्यों में अपना उच्च एंव सर्वोत्तम स्थान अजित करने में सक्षम हो पाया है। पंजाब की इन कला विभूतियों ने संगीत समाज को नवीन तालों, उच्चकोटि के शिष्यों एंव नवीन विचारधाराओं से पल्लवित एंवम् षोषित किया है और अपनी कर्मण्यता, कर्मठता एंव अविस्मरणीय सांगीतिक कला के सौजन्य से देशों–विदेशों में अनेकों बार पुरस्कृत होते रहे है। विश्वभर में भारतीय तबला वादन परम्परा में पंजाब घराने के तबला वादाकों ने अपनी अग्रणी, अनूठी भूमिका अदा की। इनमें से कुछेक उल्लेखनीय नाम है– मियां कादिर बख्श, उस्ताद अल्लारखा खां, उ० लक्ष्मण सिंह सीन, उस्ताद जाकिर हुसैन।

मियां कादिर बख्श

मियां कादिर बख्श पखावज व तबले के सर्वश्रेष्ठ तथा बहुप्रतिष्ठित कलाकार माने जाते है। उन्हें पंजाब घराने की नींव रखने वाले प्रखर तथा उत्कृष्ट कलाकार स्वीकार किया गया है। वह महान पखावज वादक मियां फकीर बख्श के सुपुत्र थे। इनका जन्म 1902 ई0 के लगभग हुआ । इन्होंने अपने कठिन रियाज व सृजन से परंपरागत पखावज शैली को नया मोड़ दिया। यद्यपि तबला यह बाएं हाथ से बजाते थे, लेकिन इसकी तैयारी में वह बेजोड़ थे। पिता फकीर बक्श के देहांत के पश्चात् संगीत कला ने ही इनको आश्रय व प्रेरणा दी । उस्ताद जी की कला को उच्च स्तर तक पहुंचाने में फकीर बख्श के शिष्यो मलंग खां तथा मियां कलम इलाही जी का बहुमूल्य योगदान है। इनकी तपस्या से ही कादिर बख्श जी ने तबला वादन के उच्च मुकाम को हासिल किया। इन्होंने न केवल पंजाब की गतो,परनो, पेशकार तथा लंबे आवर्तन के कायदे को बढ़ाने में योगदान दिया अपितु पखावज के कठिन बाज को सरलता से तबले पर बजा कर इसका प्रचार प्रसार किया। इनकी दिन–रात की साधना के कारण ही पंजाब घराना अपनी अलग पहचान बनाये हुए हैं। इनकी क्लिष्ट

लयकारीके कारणसभी घराने इनकी कला का लोहा मानते थे। इनकी देश विदेश में इनकी विशाल शिष्य परंपरा रही है। उस्ताद शौकत हुसैन, तारी खाँ इसी घराने से संबंध रखते है। इसी शिष्य परंपरा के फलस्वरुप इन्हें सवा लाख उख्ली वाले भी कहा जाता है। इनकी परंपरा को उस्ताद अल्ला रखा खाँ तथा उनके सुपुत्र उस्ताद जाकिर हुसैन साहब आगे बढ़ा रहे हैं।30 सितंबर 1960 को मिया कादिर बख्श जी इस संसार को सदा के लिए अलविदा कह गए किन्तु तबला वादन व पंजाब घराने की परंपरा में इनके अद्भुत योगदान के कारण ये तबला जगत में सदैव अविस्मरणीय रहेगे।

उस्ताद अल्लारखा खां

उस्ताद अल्लारखा खां संगीत जगत के प्रसिद्ध तबला वादक माने जाते है। इनका जन्म 29 अप्रैल 1915 में पंजाब के रतनगढ़ गुरदासपुर के एक किसान परिवार में हुआ। इनके पिता तथा संपूर्ण खानदान का संगीत से कोई लेना देना नहीं था। इनके मामा जी को संगीत में बहुत रुचि थी, जिसके कारण इनके मामा जी इनके प्रेरणा स्त्रोत बने।

15–16 वर्ष की आयु में ही खांसाहब पठानकोट की एक नाटक कंपनी से जुड गए।इनकी वहां मुलाकात लाल साहब से हुई। जिन्होंने इन्हें संगीत की शिक्षा प्रदान की। जिससे इनकीसंगीत के प्रति जिज्ञासा और अधिक बढ़ गई । इसी कारण इन्होंने पंजाब घराने की वादन शैली की विधिवत शिक्षा ग्रहण कर अभ्यास करना प्रारंभ किया । यह फिल्मी दुनिया से भी जुड़े। इनका फिल्मी नाम एआर कुरेशी था। इनकी प्रमुख फिल्में थी – मां बाप, मदारी ,जग्गा ,आलम आरा, सबक। इन्होंने फिल्मों में संगीत निर्देशन भी किया लेकिन इसके बाद इन्होंने स्वयं को संगीतिक मंचों तक सीमित कर लिया। इनके चमत्कारिक एकल तथा संगति वादन के अनेक कैसेट भी प्रसिद्ध है।

भारत सरकार ने 1977 में इन्हें पदमश्री 1982 में संगीत नाटक अकादमी, महाराष्ट्र गौरव पुरस्कार अलंकरण से सम्मानित किया गया था। इन्हें कई उपाधियों से विभूषित किया गया और मान–सम्मान भी मिले। इनकी चमत्कारिक तैयारी, लय के कठिन काट–छाट और विषम प्रकृति के तालों में पूरी सिद्धहस्ता थी। तंत्र वाद्य और नृत्य की संगति एवं स्वतंत्र वादन में वे दक्ष थे ।

प्रसिद्ध तबला वादक जाकिर हुसैन इनके पुत्र है उन्होंने इन्ही से तबला वादन की शिक्षा ग्रहण की। इन्होंने अपने पिता के नक्शे कदम पर चल कर बहुत लोकप्रियता प्राप्त की। इनके अन्य पुत्र फैजल, तौफिक कुरैशी भी तबला वादन में सिद्धहस्त है तथा सफल शिष्य साबित हुए। उस्ताद अल्ला रखा खाँ के अन्य शिष्यो में योगेश सम्सी ,आदित्य कल्याणपुर ,अनुराधा पाल, निशिकांत बरोडेकर, शाम काणे प्रमुख है।

पंजाब घराने के तबले की वादन शैली को समयानुकूल मोड़ देकर उसे निखारने और लोकप्रिय बनाने में उस्ताद अल्ला रखा की भूमिका सर्वश्रेष्ट रही है। इन्होंने खुले अंग की वादन शैली में बंद बोलो का समावेश कियाए जिससे एक नया रूप उभर कर सामने आया। इनका निधन 2000 ई0 को हृदयगति रूकने से हुआ।

उ० लक्ष्मण सिंह सीन

संगीत के सन्दर्भ में पंजाब ने विलक्षण प्रतिभाओं को जन्म दिया हैं। जिनमें लक्ष्मण सिंह जी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इस महान प्रतिभा का जन्म 3 सितम्बर 1927 को ठाकुर मंगत सिंह और ईश्वरी देवी के घर गांव मोजेआझंग (सियालकोट) में हुआ। यद्यपि इनके पिता किसान थे, लेकिन संगीत के प्रति उनकी गहरी रूचि ने ही प्रो० सीन को संगीत सीखने के लिए प्रेरित किया। संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा पहले तो स्थानीय लोक संगीतकारो से ही ली गई, लेकिन मन में संगीत की गहराई तक उतरने की प्रबल इच्छा थी और अपनी इसी अभिलाषा की पूर्ति हेतु इन्हें मियाँ कादिर बख्श जैसी बेजोडप्रतिभा के पास भेजा गया। इसके अतिरिक्त लाहौर में रहते हुए पं० जीया लाल बसंत जी से इन्होने सितार वादन की शिक्षा भी ग्रहण की।

स्वतंत्र वादन करते समय प्रारम्भ में ही आपके द्वारा प्रस्तुत पेशकार में पंजाब घराने के दर्शन हो जाते हैं। दायें और बाएं का सामजस्य आपके वादन की विशिष्टता हैं। आपके द्वारा प्रस्तुत क्लिष्ट लयकारियों, तिहाईयों श्रोताओ को स्वयं ही अपनी और आकर्षित कर लेतीं थी। वादन में शुद्धता, स्पष्टता, कर्णप्रियता, बोलों की प्रकृति के अनुसार उनका वादन, कठिन और विकट लयकारियों का अत्यन्त सहज प्रयोग इनकी विशेषता हैं। आपका तबला वादन क्लिष्ट लयकारी, मधुरता व तैयारी के बेजोड़ समन्वय को दर्शाता हैं। उ०लक्ष्मण सिंह सीन जी को संगीत क्षेत्र में अपनी सेवाओं के लिए विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिसको वर्णन इस प्रकार हैं।

- Tansen Vishnu Digambar Award at All India Music Confrence in Calcutta (In 2009 Sangeet Natak Academy) Akhil Bharitya Bhaskar Rao Sangeet
- Sammelan in Chandigarh Swar Taal Marrtand up adhi Shivrashan Shivangin both Tabla & Sitar

इसके अतिरिक्त आकाशवाणी द्वारा आयोजित संगीत प्रतियोगिता में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने पर आपको उपराष्ट्रपति डॉ० राधाकृष्णन द्वारा सम्मानित किया गया और 1956 में मियाँ कादिर बख्श जी द्वारा आपको 'उस्ताद' की उपाधि दी गई । आप तबला वादन में एक ग्रेड कलाकार होने के कारण आल इण्डिया रेडियो जालंधर के साथ जुडे हुए हैं।

उस्ताद जी ने गुलाम अली, उ० अमीर खां, श्री डी०वी० पुल्स्कर, पं० ओकारनाथ ठाकुर, मास्टर रत्न, बेगम अख्तर, पं० वी० जी० जोग और पं० रविशंकर जैसे विख्यात कलाकारों के साथ तबला संगति भी की। उ० लक्ष्मण सिंह सीन जी की शिष्य श्रेणी में हरिवंश लाल शर्मा, अजीत कुमार हांडा, तलवीर सेन, तिलकराज, कालेराम, सुनीता कुमारी, करीम आलम मलिक प्रमुख हैं। उ० लक्ष्मण सिंह सीन ऐसी अद्वितीय शख्सियत विद्वता के स्वामी हैं , जिनके कारण पंजाब के तबला वादन को गौरवान्वित होने का अवसर मिला हैं। पिछले 50 वर्षों से हरिवल्लभ सभा से जुडे होने के कारण आप युवा संगीतकारों व सांगीतज्ञ विद्यार्थियों के प्रेरणा स्त्रोत्र बने हैं।

आपकी विद्वता और कला, आगामी पीढियों तक पहुचाने के लिए पंजाब संगीत कला संगम द्वारा एक दस्तावेजी फिल्म का निर्माण किया जा रहा हैं जो न केवल उसे चित्रित करेगी, अपितु संगीत सीखने वालों को प्रेरित भी करेगी।

उस्ताद जाकिर हुसैन

उ० जाकिर हुसैन और तबला वादन आज एक दूसरे के पर्याय बन चुके हैं। इनके नाम को किसी परिचय का आश्रय नहीं चाहिए। अपनी सर्जनात्मक क्षमता से इन्होने तबला को एक नई (नवीन) लोकप्रियता दी व उसे सर्वप्रिय बनाने में इनका योगदान सर्वविदित हैं।

इस अनमोल रत्न रूपी तबला वादक का जन्म 9 मार्च 1951 को मुंबई (महाराष्ट्र) में हुआ। इनके गुरु व पिता उ० अल्लारखां साहिब स्वयं उच्चकोटि के तबला वादकों में गिने जाते है। प्रारम्भिक शिक्षा सेंट माईकल स्कूल से प्राप्त करने के पश्चात् बी० ए० सेंट जेवियर कालेज मुंबई से की। तदुपरान्त इन्होने वाशिंगटन यूनिवर्सिटी से म्यूजिकोलोजी की शिक्षा तथा विविध प्रकार का इक्यूपमैटल संगीत सीखा । इसके अतिरिक्तपश्चिमी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा भी ग्रहण की। आपके तीन भाई तफिक कुरैशी, फजल कुरैशी और मुराद कुरैशी भी प्रसिद्ध तबला वादक हैं। जाकिर हुसैन जी का विवाह इतालवी अमरीकन मशहूर कत्थक नृत्यांगना ऐनटोनिया से हुआ, जिससे आपकी दो पुत्रिया हैं– अनीसा कुरैशी जिन्होंने यू० सी० एलओ ए से तीन वर्षीय डिग्री कोर्स किया हैं और इसबोला कुरैशी ,जिन्हीने मैनहटन में नृत्य की उच्च शिक्षा प्राप्त की हैं।

संगीत के प्रति आपकी रूचि बचपन से ही देखने को मिलती हैं तबले की पहली पेशकारी इन्होंने 11 वर्ष की आयु में दी। 12 वर्ष में ही इन्होने विदेशों में अपनी कला का प्रदर्शन करना शुरू कर दिया था। 1970 में अमेरिका आने के बाद इन्होने सांगीतिक कार्यक्रम देने शुरू कर दिये। इसका श्रेय आप रविशंकर, अली अकबर, शिवकुमार शर्मा और हरिप्रसाद चौरसिया को देते हैं। इन्होने कठिन परिश्रम कर अपनी विविध शैली तैयार की। संगीत जगत की महान विभूतियों ने उ० जाकिर हुसैन, को न केवल उच्चकोटि का तबला वादक माना हैं अपितु मानवीय गुणों को भी रेखांकित किया हैं।

इन्होंने अपने जीवन में जॉन मैकलोधिम मिकिर हार्ट व लेला फ्लेक व ईडकार मेयर के साथ मिलकर संगीत पर कार्य किया। इसके अतिरिक्त आप World Music Super group के संस्थापक भी रह चुके हैं तथा साथ ही तबला लय विज्ञान के प्रोजेक्ट का भी हिस्सा रहे हैं, सेनफ्रांसिसको की प्रिस्टन यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों को तबले की शिक्षा देने के साथ ही 1992 में ग्लोबल ड्रम प्रोजेक्ट की भी स्थापना आपके द्वारा की गई हैं। जॉन मैकलोधिम के साथ भी अपने कई प्रोजेक्टो में काम किया जिसके अन्तर्गत लिटिल बुद्धा का कंपोजर कलाकार व भारतीय संगीत के सलाहकार के रूप में आपका काम सामने आता हैं। वानप्रस्थ को तो 1999 कानस फिल्म समारोह के लिये भी चुना गया।

आपके द्वारा बनाई गई फिल्मों के नाम इस प्रकार हैं –Heat & Dust, Zakir& his friend, The Speaking Hand, The Rhythm, Devils Concert Experience, The way of Beauty, Talamanam Sound Clash.

आपके द्वारा बनाई गई Album – Shanti, Rolling Thunder, At the edge, Evening Ragas, actual Elements, morning Ragas, Tabla Music, Flights to Improvisation, Sangeet Sartiji, Zakir Hussain & Rhythm Experience, Magical moments of Rhythm, Kirwani, Raag Madhuvanti, Ustad Amjad Ali Khan & Zakir Hussain The Believer, Tala Matrix, Golden strings of sound, Raag chandrakauns,

Punjabi Dhamar & The Melody Of Rhythm, Mr-& Mrs-Iyer One Dollar Little Buddha, Vanaprasthan, Apocalypse Now & In Custody आपके द्वारा बनाए गए विभिन्न वैनदक जतंबा हैं।

प्रत्येक कार्य के लिए समय–समय पर हुसैन जी के सम्मानित भी किया गया जिनमें प्रमुख्य हैं –

Padam shri in 1988, Padam Bhushan in 2002, Sangeet Natak Academy Award in 1990, National Heritage fellowship of National Endowment of the art in 1999, Kalidas Samman in 2006, Govt of Madhya Pradesh, Guru Gangadhar Pradhan life time Achievement Award at Konart Dance & Music festival, 51st Grammy Award on 8th Feb, 2009.

उ० जकिर हुसैन भारतीय संगीत जगत के ऐसे अनमोल, प्रसिद्ध व श्रेष्ठ हस्ताक्षर हैं जो न केवल अपनी सांगीतिक विद्या के प्रचार–प्रसार प्रदर्शन के लिए लोकप्रिय अपितु एक सच्चे संगीतकार तथा कलाकार के अनिवार्य गुण –सहजता, सादगी,विनम्रता इत्यादि श्रेष्ठ मानवीय गुणों से भी ओत–प्रोत हैं। उनके द्वारा संगीत में दिया योगदान सदैव संगीत प्रेमियों का नेतृत्व करता रहेगा एंव अविस्मरणीय रहेगा।

सन्दर्भ सूची

मिस्त्री, आबान, पखावज और तबले के घराने एवं परम्पराए, स्वर साधना समिति जन सेनेक्स जम्बुलवाडी मुंबई (द्वितीय संस्करण)1984।

मराठे, श्री मनोहर भाल चन्द्र राव, ताल वाद्य शास्त्र, शर्मा पुस्तक सदन

मिश्र विजय शंकर, तबला पुराण, कनिष्क पब्लिशस, दिल्ली (प्रथम संस्करण 2005)

Virasat foundation Magizine sept 14th 2002

साक्षात्कार सूची

उ० लक्ष्मण सिंह सीन से किया गया साक्षात्कार, जालंधर दिनांक–4मई2015

उ० जाकिर हुसैन से किया गया साक्षात्कार, जालंधर दिनांक–31 जुलाई 2015